द्वितीय अध्याय

"'रातराणी'" नाटक की कथावस्तु "

प्रस्तावना :

भारतीय साहित्य में नाटय परम्परा बहुत ही प्राचीन रही है। नाटक की उत्पत्ति के सम्बन्ध में विद्वानों के विभिन्न मत मतान्तर हैं। डॅा. रिजवे ने नाटक की उत्पत्ति के सन्दर्भ में नाटक के मूल में मृतक वीरों की पूजा को ही प्रधान मानते हैं। उनके अनुसार प्राचीन काल में महान मृतात्माओं के मह-त्व तथा उनके प्रति अपना आदर भाव प्रकट करने के लिए नाटक अभिनीत किये जाते थे। "[1] यह कथन आंशिक रूप मे सत्य है। यदि इसे पूर्ण रूप से सत्य मान लिया जाय तो नाटक की सीमा को बहुत ही संकुचित कर देना पडेगा। डॅा. पिसेळ कठपुतलियों के नाच से नाटकों की उत्पत्ति मानते हैं। प्राचीन नाटको में 'सूत्रधार' स्थापक आदि शब्दों का प्रयोग होने के कारण इस बात की पुष्टि होती है। कठपुतलियों का खेल भी तो एक प्रकार से नाटक ही होता है। उसमें पात्रों का स्थान केवळ कठपुतलियाँ ले लेती है।

पश्चिमी विद्वान नाटक की उत्पत्ति वेदों से मानते हैं। वेदों से आये कुछ संवादो को नाटक का मूल रूप माना जा सकता है। 'वाल्मीकि रामायण', 'हरिवंश पुराण' आदि ग्रन्थों में भी नाटकों का उल्लेख मिलता है इससे यह सिध्द होता है कि हमारा नाटय-साहित्य अत्यंत प्राचीन है।

नाटयाचार्य भरत मुनि ने 'नाटयशास्त्र' में सर्व प्रथम नाटक के शिल्प का सूक्ष्म विवेचन किया है। उनके अनुसार "अनुभव और विभाव संयुक्त रचना नाटय कहलाती है। गीतादि से रंजित होकर नटों द्वारा जब उसका प्रदर्शन होता है। तो उसे नाटक कहते हैं।"[2]

कथावस्तु ही नाटक का आधारभूत और मह-त्वपूर्ण त-त्व है। मानव के शरीर में अस्थियों का जो स्थान होता है। वही स्थान नाटक

---

१. भरतमुनि— नाटयशास्त्र, पृष्ठ– ८४-८५

२. वही पृष्ठ– ८४-८५

में कथावस्तु का होता है। नाटक की कहानी को कथावस्तु या कथानक कहते है। नाटककार को अपनी कथावस्तु का चयन करने में उपन्यासकार के समान अधिक सामग्री का उपयोग करने का अधिकार नहीं होता। उसे अभिनय के लिए निश्चित समय का ध्यान रखते हुए अन्य मर्यादाओं का पालन करना पडता है। साथ ही साथ उसकी कथावस्तु इतनी बडी होनी चाहिए कि जिसे तीन चार घण्टो में खेला जा सके। इसी वजह से नाटककार को कथानक की विस्तृता में निश्चित सामग्री को चुनकर अपने मतलब के उपयोगी तत्थ चुन लेना पडता है।

आ. भरतमुनि ने कथावस्तु को दो प्रकारों में विभाजित किया है -

" आधिकारिक कथावस्तु :

नाटक की मुख्य कथा

प्रासंगिक कथावस्तु :

प्रसंगवश आई हुयी गौण कथा यह मुख्य कथा के विकास और सौन्दर्यवर्धन में सहायक होती है। "[1] आधिकारिक कथावस्तु नायक के जीवन से सम्बन्धित होती है। और यह कथा नाटक के प्रारंभ से लेकर अन्त तक चलती रहती है। प्रासंगिक कथावस्तु मुख्य कथा में योग देनेवाली होती है। प्रासंगिक कथाएँ एक से लेकर अनेक होती है। प्रासंगिक कथा नायक के चरित्र विकास में सहायता देती है। प्रासंगिक कथा दो प्रकार की होती है - ‘ पताका ’ तथा ‘ प्रकरी ’ मुख्य कथा के साथ-साथ अन्त तक चलनेवाली कथा को ‘ पताका ’ कहते हैं। तथा नाटक के बीच में समाप्त होनेवाली कथा ‘ प्रकरी ’ कहलाती है।

कथावस्तु के तीन आधार हैं -

प्रख्यात - जिसका आधार इतिहास, पुराण, जनश्रुति होती है।

---

१. भरतमुनि - नाट्यशास्त्र, पृष्ठ — १०

उत्पाद्य : इसके अन्तर्गत नाटककार की अपनी कल्पना होती है।

मिश्र : इसमें इतिहास और कल्पना का सामंजस्य होता है।

नाटक के कथावस्तु की पाँच कार्यावस्थाएँ होती हैं।

कार्यावस्थाएँ - नाटक के प्रधानफल को कार्य कहा जाता है। नाटक में यह कार्य कई अवस्थाओं में दिखायी देता है। इन्हीं अवस्थाओं को कार्यावस्थाएँ कहा जाता है। इन कार्यावस्थाओं के अन्तर्गत प्रारंभ, विकास, संघर्ष, चरमसीमा और अन्त आदि ब्यौरों का अन्तर्भाव किया जाता है। नाटक के कथानक के आधार पर पौराणिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनीतिक और वैज्ञानिक ये पाँच प्रकार किए गये हैं।

'रातरानी' की कथावस्तु -

अखिल भारतीय कालिदास पुरस्कार प्राप्त तीन अंकी नाटक 'रातरानी' सन १९६३ में प्रकाशित हुआ। इसे विश्वविद्यालय की पाठ्यक्रम समितियों एवं रंगकर्मियों दोनो ही दिशाओं में यथेष्ट सन्मान मिला है। नाटक के प्रारंभ में आधुनिक रंगमंच शीर्षक की भूमिका में हिन्दी के नाटकों के लिए दर्शक जुटाने की समस्यापर विचार करते हुए डॅा. लाल ने भाष्य किया है " ये दर्शक यथार्थवादी नाटक चाहते है, न अभी प्रयोगात्मक रंगमंच। ये सब नाटक चाहते है। कैसा नाटक ? ऐसा जो एक ओर इनके विषय, इनके यथार्थ से संबंधित हो, दूसरी ओर जो इनकी भावानुभूति, इनके दर्शन को उसके भीतर से वाणी दे सके, उन्हीं के मानसचित्र उन्हीं के राग-रंग में जी उन्हें बांध सके और उन्हे रंगशाला में बैठने के लिए जो आकर्षित कर सके। क्योंकि व्यावहारिक स्तरपर आज नाटककार से पहले रंगशाला में दर्शन की समस्या है। "[1] शायद इसी

---

१. डा. लक्ष्मीनारायण लाल- रातरानी-, पृष्ठ-१०-११

कारण नाटककार भारतीयता की रक्षा के लिए बहुत चिंतित दिखाई देता है और आपने नाटक को दक्षिण भारत की पारिवारिक कामेडी फिल्मों के धरातलपर उतार ले जाता है। इसके आधारपर 'रातरानी' का सृजन किया है।

आलोच्य नाटक तीन अंको मे खेला गया है। पहला अंक स्वतंत्र है लेकिन दूसरा तथा तीसरा अंक दो दृश्यो में विभाजित है। पूरा नाटक जयदेव के घर पर खेला गया है।

प्रारंभ :

प्रस्तुत नाटक का प्रारंभ जयदेव के घर पर शुरु होता है। बडा-कमरा बरामदे में खुलापन बगीचा, फुलवारी उपर नीला आकाश, पूरा सजा हुआ जयदेव का बंगला। पर्दा खुलते ही पृष्ठभूमि में बॉसुरी का आवाज आता है और रंगमंच पर नाटक की नायिका कुंतल का प्रवेश और वह अपने स्वर में गीत गा उठती है।

" किस कर में यह बीना धर दूँ ?
देवों ने था जिसे बनाया
देवों ने था जिसे बनाया
मानव के हाथों में कैसे इसको आज
समर्पित कर दूँ ?
किस कर में यह बीना धर दूँ ?
इसने स्वर्ग रिझाना सीखा
स्वर्गिक तान सुनाना सीखा
जगती की खुशा करनेवाले स्वर से कैसे
इसको भर दूँ ? "[१]

---

१. डा. लक्ष्मीनारायण लाल – रातरानी, पृष्ठ-२२

तभी एक ओर से मंच पर जयदेव चला आता है। कुंतल की अवस्था अठ्ठाईस वर्ष के आसपास है वह यौवन की महिमा से पूर्ण है। गुलाबी रंग की साडी उसपर सज रही है। जयदेव भूरे रंग का सूट पहने हुए है वह एक आकर्षक पुरूष है। उसकी आयु पैंतीस वर्ष से अधिक नहीं है। जयदेव अमीर बाप का पुत्र हैं। जयदेव के पिता इंजिनियर थे उन्होंने अपने कर्तव्य का पालन किया है। वे अपने बेटे जयदेव को एक बडा प्रेस और बैंक में ७५ हजार रुपयों का बैंक में बॅलन्स, और रातरानी नामक बगीचा छोडकर चले जाते है। इससे पहलेआदर्श सेवक माली और सुशिल बहु कुंतल जो आदर्श भारतीय नारी है। उसे अपने घर लाकर अपने कर्तव्य को निभाते है। इस नाटक की कथावस्तु आज के मनुष्य के जीवन से संबंधित है। वह आज के अर्थप्रधान युग की बौध्दिकता का मानवोय संवेदनाओं के साथ द्वंन्द्व प्रस्तुत करता है। भौतिकवादी युग में जीवन की हार्दीकता, मानवता और व्यापक जीवनादर्शों की क्या भूमिका है, नाटक इसी प्रश्न को लेकर आगे बढता है। नाटककार ने कुशल से पति-पत्नी के बीच इन जीवन-मूल्यों के संघर्ष को एक रोचक कथानक द्वारा व्यक्त किया है।

विकास :

' रातरानी ' नाटक का केंद्र जयदेव और उसकी पत्नी कुंतल है। जयदेव प्रेस का मालिक है वह प्रेस के कर्मचारियों को उनका वेतन और बोनस न देकर उस बचत को स्वयं की सुख समृध्दि में लगाना चाहता है। इसकीरण प्रेस में स्ट्राईक, हो जाती है। जयदेव प्रेस के मजदूरों पर ध्यान नहीं देता। परिणाम स्वरूप प्रेस के मजदूर भूख हडताल कर लेते हैं। स्ट्राईक का कारण जयदेव की बेवकूफी ही हैं। तो दूसरी ओर जयदेव की पत्नी कुंतल है जिसका जीवन जयदेव से भिन्न है। वह अपने ससुर की पूनीत परम्पराओं का पालन करता

करता हुआ बूढा मालो के साथ अपनी फुलवारी को सदा हरा भरा बनाये रखने को कृत-संकल्प है। उसकी ममता और सहानुभूति केवल फूल और फूलवारी तक ही सीमित नहीं है। वह अपने पति के विपरित ही प्रेस के मजदूरों से अत्याधिक सहानुभूति रखती है, और छिपकर उनकी आर्थिक सहायता भी किया करती है, मजदूरों के बच्चें को प्यार कपडे फल दे देती है। इससे जयदेव को लगता है कि कुंतल की सहानुभूति के कारण ही प्रेस में स्ट्राईक चल रही है। इसी झूठी समझ से जयदेव और कुंतल में संघर्ष का प्रारंभ होता है। कथानक संघर्ष की ओर मोड लेता है। जब जयदेव और कुंतल के बीच स्ट्राईक को लेकर वार्तालाप हो रहा था तब उपर्युक्त बातो की पुष्टि देते हुए जयदेव कुंतल से कहता है -

" प्रेस के कर्मचारियों को मेरे इस घर की लक्ष्मी की सहानुभूति जो प्राप्त है :"[१] बातोबातो में संघर्ष बढता जाता है और जयदेव कुंतल से पसन्त होता है वह कहता है यदि तुमने स्ट्राइक कर दिया तो मेरा दिवाला निकल जायेगा। तब कुंतल उसे समझाते हुए कहती है--- "

सही तो कठिनाई है। धर्म में कहीं स्ट्राइक नहीं है स्ट्राइक है तुम्हारे अर्थ में। तुम तो एम. कॉम पास हो सब जानते हो।"[२]

प्रेस मे हडताल चल रही है , और जयदेव घर में छुपा बैठा है। उसे अपने प्रेस कर्मचारियो के प्रति कोई सहानुभूति नहीं है। वह सिर्फ उनपर कैची चलाना माने उन्हें लुटना जानता है। वह एक अर्थवादी युवक है। अत: वह हर चीज का मूल्य पैसों में आँकता है। कुंतल उसे समझाती है। कि इस वक्त कर्मचारियों को तुम्हारी जरुरत है। तुम्हें प्रेस मे जाना होगा। लेकिन उसने प्रेस के मशिनमैन को और फोरमैन को काम से निकाला है।

---

१. डा. लक्ष्मीनारायण लाल — रातराणी, पृष्ठ-२४

२. डा. लक्ष्मीनारायण लाल — रातराणी , पृष्ठ-२४

जयदेव अपने पत्नी में दो रूप देखना चाहता हैं। उसके मतानुसार घर में एक रूप और बाहर दुसरा रूप। घर में पत्नी और बाहर पैसे कमानेवाली लक्ष्मी तथा प्रेयसी। लेकिन कुंतल है की एक आदर्श पत्नी केरूप में पाठक के सामने प्रस्तुत होती है। अपने घर में स्थित फुलवारी मे काम करनेवाला माली जो नौकर है उसे नौकर न समजकर अपने परिवार का एक हिस्सा समझती है। माली भी कुंतल के स्नेह को पाकर कृत-कृत्य हो जाता है। उसके मालिक इंजिनियर साहब ने सही कथा था कि इस परिवार रूपी फुलवारी को हमेशा हराभरा रखने के लिए मैं कुंतल को माने नन्दनवन की इंद्रायणी को हमारे घर लाया हूँ। माली कुंतल की हर आज्ञा का पालन करने में तत्पर है। जब माली और कुंतल के बीच वार्तालाप चल रहा था. तब कुंतल माली बाबा से अपने जीवन में विवाह को लेकर आयी समस्या का अंकन करती है कि उसकी किस प्रकार निरंजन से तय हुई शादी टूट जाती है और तदनंतर इंजिनियर साहब मुझे अपनी बहू के रूप में स्वीकार करते हैं। इससे दहेज समस्या का पर्दाफाश किया हुआ सिध्द होता है।

एक दिन सुंदरम् कुंतल के घर अचानक चली आती है। उसका वास्तविक नाम कुलवंती देवी अवास्तव है। उसे अपने सहेलियोंने सुंदरम नाम दिया था। अपने नाम के तरह वह सुंदर भीतर से उन्मुक्त और सुहृदय थी। अब वह दिल्ली रेडिओपर कार्यरत है। कुंतल तथा सुंदरम के बीच अपनी पुरानी यादों को लेकर काफी काका-मस्ती होती है। सुंदरम को कुंतल की फुलवारी बहुत अच्छी लगती है। तब वह कुंतल से कहती है कि मुझे अपने फुलवारी में नौकरानी के रूप में रख लो ताकि मैं उसका मुक्त सुगंध ले सकू। बाद में वह कुंतल से दिल्ली में घटित घटना सुनाती है। उनके बिरादरी का लडका उससे प्यार करता थी। और सुंदरम का भाई कॅप्टन विजय एक दिन दिल्ली आता है। दोनो सिनेमा चले जाते है। उन्हें देखकर वह प्यार करनेवाला लडका किसप्रकार चल जाता है यह सअभिनय बताती है। तब कुंतल उसपर खुश होकर कहती है...."सुंदरम। यू आर

ग्रेंट सुन्दरम। अकले जन्म में तुम पुरूष होना, मैं तुम्हारी पत्नी बनूँगी। तुम मुझे जब पुकारोगे... नहीं नहीं पुकारोगे कि ओ री हो कुंतल, तुम कहाँ हो ? तब मैं चांदनी के झूले पर से बोलूंगी, मैं तुम्हारे लिए फूलों का हार बना रही हूँ।"[1]

तभी जयदेव दोस्त प्रकाश और योगी ताश खेलने हेतु कुंतल के घर चले आते हैं। इससे पहले कुंतल हरदिन की फाका-मस्ती, हुड़दंग मचाना, ताश खेलना आदि बातों का जिक्र सुंदरम के पास करती है। तब सुंदरम स्वंय इंजिनियर साहब की आत्मा का रूप लेती है और उन दोनों को डराती है। उसके पश्चात दोनों सुंदरम की शादी के सन्दर्भ में बातें करते हैं। तब सुंदरम का मन्तव्य दृष्टव्य है कि " पढ़ी लिखी लड़कियों का यह सारा विवाह का चक्कर बड़ा ही अपमानजनक है। पति के माने इज्जत मर्यादा नहीं, जो विवाह के बाद कन्या को वर से मिलती है। बल्कि पति के अर्थ होते. है मालिक, मालिक माने खुदा नहीं, मालिक माने गुलामबाबा मालिक ! "[2]

इसके साथ साथ युगों से चली आयी नारी जाति की दासता तथा वर्ग-संघर्ष को स्पष्ट करते हुए सुंदरम कहती है ----" मेरी समझ मे तो इसका एक ही कारण है - पिछले करीब एक हजार वर्षों से हमारे समाज का मन सिर्फ मालिक और गुलाम ही देखता आया है। वही एक मर्यादा वही एक सम्बन्ध।"[3]

कुंतल की शादी पहले निरंजन से तय हुई थी। लेकिन दहेज के कारण शादी टूट जाती है। अब निरंजन सुंदरम का अच्छा दोस्त है। अचानक नाटककार लक्ष्मीनारायण लाल ने फिर कुंतल और निरंजन को एक दूसरे के सामने ला खड़ा कर दिया। निरंजन के व्यक्तित्व में मानवतावादी पक्ष है जो जयदेव में नहीं है। कुंतल ने अपनी शादी से पहले निरंजन को

---

१. डा. लक्ष्मीनारायण लाल— रातरानी, पृष्ठ-३२
२. वही पृष्ठ-३७
३. वही पृष्ठ-३७

कुछ खत लिखे थे। इन पत्रों की जानकारी पाकर जयदेव कुंतल के प्रति शंकालू हो जाता है। इसी बात को लेकर दोनों के बीच मौखिक संघर्ष हो जाता है। तब एक दिन कुंतल निरंजन से स्वयं भेजे पत्रों प्राप्त कर लेती है और जयदेव को सुनाती है। तब इन पत्रों में साहित्य संगीत आदि बातों को सुनकर जयदेव बोर हो हो जाता है। उसका भ्रम दूर हो जाता है।

कुंतल एक आदर्श भारतीय नारी है। वह अपने पति को परमेश्वर मानती है तथा उसमें विश्वास रखती है। वह हिन्दू नारी होने के कारण अपने पति से प्यार नहीं प्रेम करती है। जब जयदेव प्रेम और प्यार के बीच क्या अन्तर है पूछने पर वह समझाते हुए कहती है - " प्रेम में मुक्ति है और प्यार में बन्धन। कहीं पढा था इस देह के प्याले में जब प्रकृति अपनी रंगीन शराब उंडेल देती है तो उसे हम प्यार कहने लगते है, लेकिन प्रेम.......।"[1]

संघर्ष :

यहाँ पर कथानक विकास के साथ-साथ संघर्ष की ओर अग्रेसर होता रहता है। जयदेव अपनी पत्नी में दो व्यक्तित्व को चाहता है। एक आन्तरिक व्यक्तित्व और दूसरा बाहरी व्यक्तित्व। इस बात को स्पष्ट करने हेतु जयदेव का वक्तव्य दृष्टव्य है कि " आज हर स्त्री-पुरुष को अपने दो व्यक्तित्व रखने पडेंगे । मैं कुन्तल को बेहद प्यार करता हूँ। पर मैं कुन्तल को समान रूप से उपयोगी देखना चाहता हूँ- यह मेरा उसका बाहर का व्यक्तित्व होना चाहिए ।"[2] लेकिन कुंतल अपने में केवल आन्तरिक व्यक्तित्व ही चाहती है, वह बाहरवाला व्यक्तित्व नहीं चाहती। तब इस बात को लेकर जयदेव और कुंतल में संघर्ष बढ जाता है। इस संघर्ष के दुष्परिणाम से गृहस्थी को सुरक्षित रखने के विचार से कुंतल नौकरी करने लगती है। जयदेव केवळ अर्थार्जन के लिए अपनी पत्नी का बाहरवाला व्यक्तित्व चाहता है। कुंतल युनीवर्सिटी के म्युझिक विभाग में अध्यापक के रूप में

---

१. डा. लक्ष्मीनारायण लाल — रातरानी, पृष्ठ - ७२-७३
२. वही पृष्ठ - ४३

नौकरी करने लगती है, उसे ढाई सौ रुपये प्रति मास वेतन मिलता है। पत्नी की कमाई पर जयदेव कार खरीदना चाहता है। स्वयं निठल्ला है, पूर्वार्जित प्रेस पर ध्यान नहीं देता। उसके नाम जो पिता ने ७५ हजार का बैंक बैलन्स रखा था उसे वह योगी और प्रकाश के साथ में खर्च करता है। तब कही जयदेव कुंतल को नौकरी करने के लिए मजबूर कर देता है।

लेखक ने माली के माध्यम से वर्गहीन समाज की प्रतिष्ठापना करनी चाहा है। इसीलिए माली का प्रसंगवश यथोचित चित्रण किया है। जब कुंतल और माली के बीच इंजीनियर साहब को लेकर वार्तालाप चल रहा था तब माली कुंतल से कहता है - " मां। मालिक कहा करते थे - मनुष्य ईश्वर की लिखी हुई एक पाती है "- हमें पाती का मजमून देखना चाहिए उसकी जात-पाँत रूप रंग देखने से क्या। मालिक मेरे असली गुरु थे, मां।"[१]

जयदेव कुंतल से आधुनिक बनने का आग्रह करता है लेकिन कुंतल उसकी स्वार्थी आधुनिकता से अच्छी तरह से वाकीफ है। परिणाम स्वरूप वह व्यंग्य कसते हुए जयदेव से कहती है - " तब तो यह बड़ा गलत अंग है तुम्हारी आधुनिकता का। तभी मैं देखती हूँ आज का सारा आधुनिक समाज केवल शरीर के स्तर पर जी रहा है। इसी का फल है आज समाज में इतना झूठ, इतना आडम्बर अविश्वास और हृदयहीनता।"[२] आगेचलकर कुंतल अपनी नौकरी से त्यागपत्र देती है, क्योंकि वह जान जाती है कि यह जो युनीवर्सिटी में म्यूजिक अध्यापिका की नौकरी मिली है वह निरंजन की शिफारिश का प्रतिफल है। तब कुंतल का आत्मसम्मान जाग जाता है। वह किसी की दया का पात्र बनना नहीं चाहती। इस बात को लेकर कुंतल और जयदेव में नोक संघर्ष होता है, लेकिन कुंतल ने तुरंत महिला महाविद्यालय में नौकरी करने पर वह चुप रहता है। कुंतल के उपर्युक्त व्यवहार पर निरंजन उसपर नाराज होने के बजाय उसकी तारिफ ही करता है।

---

१. डा. लक्ष्मीनारायण लाल— रातरानी, पृष्ठ-५0
२. वहीं पृष्ठ- ५३

माली कुंतल के घर का प्रामाणिक सेवक है। बगीचे का काम उसके लिए पूजा है, उसके लिए पूजा का अर्थ कर्म, कर्म ही भगवान की पूजा है। वह जयदेव के व्यवहार को लेकर हमेशा विचारग्रस्त रहता है। निरंजन सुंदरम के साथ हमेशा कुंतल के घर आता रहता है। कुंतल के घर में प्रकाश, योगी, जयदेवताश खेलते रहते हैं। एक दिन प्रेस कर्मचारी जयदेव को रास्ते में रोकते हैं तथा उसे गालियाँ देते हैं। तब वह उनपर क्रोधित होता है, और अपने घर आकर गालिया देने लगता है। कुंतल ने पुछने पर वह नोकरों के खिलाप तथा हड़ताल के सन्दर्भ में बोलता है। जयदेव के दोस्त सुंदरम पर हाबी होते हैं। लेकिन जयदेव उनकी बकवास का विरोध करता है। जब जयदेव के पैसों का भेद खुल जाता है, तब कुछ न समझनेवाला मालो पहली और अब की स्थिति में अन्तर महसूस करता है। जब हड़तालवाले लोग जयदेव के पीछे उसके घर पर आते है तब मालो अपनी आन्तरिक भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहता है - " माँ, यह सब माजरा मेरी समझ में नही आता। प्रेस से इतनी -इतनी आमदनी होती थी। इतना सारा धन मेरे मालिक छोड गये थे.....।"[१]

जयदेव के प्रेस में हड़ताल चल रही थी। इधर कुंतल के घर सुंदरम आती है और कुंतल से पिकनीक के सन्दर्भ में वार्तालाप करती है। कुंतल सुंदरम से पूछती है पिकनीक पर कौन-कौन जायेगा उसी समय जयदेव घबरायी हुई अवस्था में दोडते हुए घर पहुँचता है। वह प्रेस वर्कर्स को गालियाँ देने लगता है, जिन्होंने उसे बीच रास्ते में रोका था। तभी मजदूर जयदेव के घर पहूँच जाते है। कुंतल ने उन्हें पूछने पर वे वास्तविक स्थिती का बरजान करते है। मालकिन प्रेस में हड़ताल चल रही है। हमारे दो आदमी पिछले तीन दिनों से भूख हड़ताल में पड़े हैं... और इन्हें इन सब बातों से कोई

---

१. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल — रातरानी, पृष्ठ-६२-६३

सरोकार नहीं।....हम भूखे मरें...और ये प्रेस में ताला डालकर खुद होटल...हवेली में रंगरेलियाँ करें।....हमसे पूछा तक नहीं कि हमारी मुसीबतें क्या हैं....हमारी माँगों की तो बात ही दरकिनार है।"[1] तब कुंतल उनके पक्ष में उन्हें समझाती है कि तुम्हारे पक्ष का मैं विचार करूँगी। आपको हड़ताल बंद करना होगा। और हड़ताल खत्म होता है।

एक दिन सुंदरम फुलवारी से पुष्प लेकर आती है। तब कुंतल वहीं पुष्प सुंदरम के हाथों निरंजन के चरणों पर सजाती है। इस पद्धति से दो मनों के मिलन को शादी का रूप देती है। सुंदरम और निरंजन कृत-कृत्य हो जाते हैं। जब यह बात जयदेव को ज्ञात होती है तब वह कुंतल के प्रति क्रोध प्रकट करता है। उसका कहना यह था कि निरंजन ब्राह्मण है और सुंदरम कायस्थ, दोनों का विवाह कराके तुमने निरंजन से बदला लिया है। तब कुंतल खूब रोती है। लेकिन लेखक इस घटना से जाति-पाँति का विरोध तथा वर्गहीन समाज की प्रतिष्ठापना करना चाहता है।

नाटक के तीसरे अंक के प्रथम दृश्य में जयदेव, प्रकाश और योगी तारा खेलते हुए नजर आते हैं। इन लोगों के बीच ताश को लेकर झगड़ा होता है। इतने में बाहर से सुंदरम चली आती है, उसने बसंती रंग की साड़ी पहनी हुई है। वह आज बहुत कृश दिखाई दे रही थी। उसने निरंजन के कहने पर रेडिओ स्टेशन पर स्थित नौकरी छोड़ दी थी। लेकिन कुंतल ने नौकरी छोड़ने पर जयदेव उसे डाँटता है। यहाँपर परस्पर विरोधी संघर्षमय चित्रण दृष्टिगोचर होता है। जयदेव अपने दुराचारी दोस्तों के साथ जयदेव की आँखें खुल जाती हैं। वह कुंतल से कहता है, मेरे पास

---

1. डा. लक्ष्मीनारायण लाल — रातरानी, पृष्ठ-80

जो ७५ हजार रुपये का बैंक बैलैंस था वह मैं पूरी जुए में हार गया। कुंतल को पैसे जाने का दुख नहीं होता बल्कि अपने पति का उचित परिवर्तन देखकर वह फुली न समाती है।

कुंतल किशोरी की पत्नी की सहायता करती है तब जयदेव उससे इस बात को लेकर झगडा करता है। कुंतल दुखी होती है तब माली उसे देखकर करता है देखो न मां तुम्हारी अवस्था की तरह फुलवारी के फुल भी मुरझा गये हैं। तभी आगे भाग्यवाद का सहारा लेकर वह कहता है। हमारी फुलवारी में केसर का फुल खिला है। जो उसके पति का प्रतीक है। इससे पहले जब कुंतल बीमार थी तब हॉस्पीटल में उसी अवस्था में वह हर रात सपना देखती थी। उसमें प्रतीकात्मक रुप में लेखक ने कुंतला जीवन प्रतिपादित किया है। कुंतल सुंदरम से कहतीहै । " एक बडा-सा सुनसान महल, जिसमें सुनहारे कागज केफटे हुए पन्ने तेज हवा में चारों ओर उड रहे हैं। मैं उन उडते हुए फटे पन्नों का पीछा करती हुई सारे कमरों में दौड रही हूँ, पर मेरे हाथ कुछ भी नही आता। फिर मैं एक बडे से हॉल कमरे में फुलों की सेज पर गिर जाती हूँ, वहां कभी गन्धराज, रातरानी, हिरना, रजनीगंधा की खुशबू का झोंका आता, कभी सितार की झंकार, स्वर-मण्डल और बांसुरी का मोहक-संगीत और उसके बीच किसी मायावी की तेजहंसी ।"[१]

चरमसीमा =

संघर्ष और संघर्ष के बीच से कथानक चरमसीमा पर आकर पहुँचता है। प्रेस वर्कर्स ने फिर से हडताल की है। अब जयदेव और कुंतल के साथ निरंजन भी है। वर्कर्स जयदेव के घर जुलूस निकालते है। सब भयभीत है। कुंतल उन्हे रोकने के लिए आगे जा रही थी तभी जयदेव उसे रोक लेता है। उसी वक्त जयदेव के जुआरी दोस्त प्रकाश और योगी आते हैं। जो झगडा हुआ था उसे भूलकर वे उसे स राय देते है कि जब जुलूस आयेगा तब दो गुंडों को कहकर पुलिस पर पत्थर फिकवायेंगे। तब पुलिस जुलूस-

---

१. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल – रातरानी, पृष्ठ – ९८-९९

वालों को लाठी से मारेंगे। इसबात पर जयदेव सहमति प्रकट करता है। लेकिन वे दोनों शर्त रखते हैं कि इसके बदले में सुंदरम का परिचय करवाना होगा। तब उनके बीच पुनश्च झगडा होता है। कुंतल बीच में आने पर प्रकाश और योगी चले जाते हैं। तब अपने आप में दो व्यक्तित्व रखनेवाला जयदेव टूट जाता है। उसका बाहरी व्यक्तित्व हार जाता है। वह झूठा साबीत होता है। वह अपने आप को अकेला और निर्बल समझता है। जयदेव के अनुसार - " मैंने तुमसे कहा था न मेरे पास दो व्यक्तित्व हैं पर आज मैं तुमसे कहता हूँ कि ये दोनो झूठे है। विश्वास करो, आज मुझे पहली बार चोट लगी है, वह भी सीधे, हृदय में। कुन्तल, इस तरह अगर तुम रोओगी तो मैं कहाँ जाऊँगा। तुम नहीं जानतीं मैं अकेले कितना निर्बल हूँ। "[1]

अंत :

नाटक का अंत बडा हृदय द्रावक है। कुंतल जुलूस में जाना चाहती हैं लेकिन जयदेव उसे रोकता है। आज सही माने में वह पत्नी से प्रेम करता नजर आता है। माली कुंतल के कहने पर फुलवारी में लगा केसर का फूल ला देता है। कुंतल केसर का फूल अपने आँचल में बांधकर जुलूस में कुद जाती है। कहीं से एक पत्थर कुंतल के सर पर लगता है। वह घायल हो जाती है। निरंजन जो कुंतल की सहायता कर रहा था वह उसे उठाकर ले आता है। कुंतल की अवस्था देखकर मालो रो पडता है। उनके पीछे जुलूसकारी भी आ पहूँचते हैं। वे इस घटना को लेकर शार्मिंदा हैं। सारा दृश्य निस्तब्ध हो जाता है। अॅम्बुलन्स लाने के लिए निरंजन ने हॅास्पीटल फोन कर दिया है। तभी कुंतल होश में आती और अपने आप को सॅभालती है। उसके आँचल मे बँधा हुआ केसर का फुल मौजूद था। उसके पति पर किसी प्रकार की आँच नहीं आयी थी। यहाँपर कुंतल

---

१. डॅा. लक्ष्मीनारायण लाल - रातराणी, पृष्ठ-११७

13135

का आदर्श भारतीय नारी का रूप सिध्द होता है। पर्दा गिरता है। और नाटक समाप्त होता है। यहाँपर नाटककार ने मानव मूल्यों की प्रतिष्ठापना करने का वास्तविक प्रयास किया है। नाटकीय तत्वों की दृष्टि से 'रातरानी' नाटक सफल बन पडा है।

नाटक के अन्त में नाटककार लक्ष्मीनारायण लाल ने जयदेव के व्यक्तित्व का उन्नयन करने का प्रयास किया है। साधारण मानवोचित गुण-दोषों से क गठित जयदेव का व्यक्तित्व अन्त में उत्थान की ओर अग्रसर होता है।

निष्कर्ष :

निष्कर्षत: हम कह सकते है कि डॉ. लाल कृत 'रातरानी' एक समस्यामूलक सामाजिक नाटक है। आलोच्य नाटक में पूँजीपति वर्ग के खिलाफ शोषितों का संघर्ष चित्रित होता है। प्रस्तुत नाटक का नायक जयदेव जो पतन की राह अपनाता है, अन्त में अपने झूठे व्यक्तित्व के खो जाने पर पतनोन्मुखं मार्ग चला आता है। समाज में स्थित जाति-पाँति दहेज, आर्थिक विषमता आदि समस्याओं का उद्घाटन किया है। इसमें मुख्य कथा के साथ-साथ मालो, निरंजन, सुंदरम आदि की प्रासंगिक कथाएँ भी चलती हैं। नाटक के तत्वों के आधार पर प्रस्तुत नाटक खरा उतरता है। सभी कारणों का विचार करने पर स्पष्ट होता है कि नाटक का कथानक अत्यंत सुंदर, प्रभावशाली कौतुहल वर्धक एवं रोचक बन पडा है।